ILLUSRATED SCRIPTURE STORIES, III.

Jesus Christ and His Friends.

सचित्र धार्मिक कथाएं—३

जगत गुरु यीशु मसीह जी और उनके मित्र

लेखक

प्रभु सेवक यूनस सिंह, अल्मोड़ा

PUBLISHED BY

The North India Christian Tract & Book Society,

ALLAHABAD.

1st Edition.
1,000 *copies*

1921

Price 4 annas.
दाम ४ आना



जगत गुरू यीशु मसीह जी और उन के मित्र

१.

योहन बपतिस्मा देनेहारा.

जब जगत गुरू यीशु मसीह जी की उम्र ३० साल की हुई तो योहन नाम एक उपदेशक उस जंगल में जो मृतक सागर के निकट है और जिसे यहूदिया का जंगल कहते हैं प्रगट हुआ. इस मनुष्य का रंग ढंग औरों से बिल्कुल ही निराला था. उस का भोजन वस्त्रादि भी अद्भुत प्रकार के थे. योहन के जन्म का समाचार भी एक दूत के द्वारा दिया गया था और इसलिये कि उस के माता पिता बहुत ही बूढ़े हो गये थे वे दूत की बात का विश्वास न कर सके. परन्तु समय पर बालक का जन्म हुआ और उसी समय उस का पिता जो अपने अविश्वास के कारण गूंगा हो गया था फिर बोलने लगा.

योहन जब सियाना हुआ तो वह जंगली स्थानों में रहने लगा और ध्यान तपस्या में समय बिताने लगा. वह ऊंट के बालों का बना हुआ वस्त्र पहिनता और टिड्डी और बन मधु खा कर निर्वाह करता था.

जब योहन की अवस्था कोई तीस साल की हुई तो वह यर्दन नदी के तट पर आ गया और बड़े ढाढस और उत्साह से धर्म

प्रचारने लगा. इस की चर्चा सारे यहूदिया देश में फैल गई और दूर दूर से लोग उस का उपदेश सुनने को आये. गांव के साधारण लोगों से लेकर बीर योद्धा और ढीठ फरीसी भी उस के पास आकर प्रश्न करने लगे. योहन उन सब को जो उस का उपदेश सुनने को उस के पास आते कहता था कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है. सो जो जो पश्चात्ताप करते वे यर्दन नदी में बपतिस्मा अर्थात जल-संसकार लेते और धार्मिक जीवन व्यतीत करने का प्रण बांधते हुए अपने अपने स्थान को फिर जाते थे.

योहन ने लोगों के प्रश्न के उत्तर में कि वह कौन है स्पष्ट रूप से बता दिया कि मैं केवल जंगल में पुकारनेवाले का शब्द हूं मैं इसलिये आया हूं कि आनेवाले जगत गुरू यीशु मसीह जी के लिये मार्ग तैयार करूं. मैं तो केवल जल से बपतिस्मा देता हूं परन्तु वे मुझ से अधिक शक्तिमान हैं मैं उन की जूतियां उठाने के योग्य नहीं हूं सो वे तुम्हें पवित्रात्मा और आग से बपतिस्मा देंगे. योहन के उपदेश को सुन कर लोग घबरा गये और सारे देश में बड़ी हल चल मच गई. परन्तु यह उपदेशक इसी सोच में था कि कब जगत गुरू जी प्रगट होवें और मैं अपनी सेवा को उन्हें अर्पण कर उन के बिषय में साक्षी देऊं.

जिस बीच योहन यर्दन के तट पर उपदेश कर रहा था उस समय गुरू जी नासरत में अपने काम काज में लगे हुए थे. जब उन्हों ने जाना कि अब सेवा करने का समय आ गया है तब नासरत नगर को छोड़ सामरिया हो कर यर्दन नदी के तट पर योहन के निकट आये. योहन जो अब लों किसी से डरता न था यीशु

मसीह जी को देखते ही कुछ घबरा सा गया. इतने में गुरू जी योहन के निकट आये और बोले कि मुझे भी बपतिस्मा दो. योहन ने साहस पकड़ा और बोला गुरू जी मुझे आप के हाथ से बपतिस्मा लेना अवश्य है और आप मेरे पास आये हैं. गुरू जी तो जानते ही थे कि योहन यह कहेगा परन्तु यह कह कर कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीति से सब धर्म को पूरा करना चाहिये उसे राजी कर लिया. योहन ने भी जान लिया कि जो कुछ गुरू जी कहते उसे मानना चाहिये सो उस ने होने दिया.

गुरू जी योहन के संग जल में उतरे और ज्योंही वह जल से बाहर निकले तो उन के लिये स्वर्ग खुल गया और उन्हों ने ईश्वर के आत्मा को कपोत की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा. और उसी घड़ी यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं.

योहन को पहिले से मालूम था कि जिस पर पवित्रात्मा उतरे वही जगत गुरू और त्राणकर्त्ता होगा. सो जब योहन ने पवित्रात्मा को उतरते देख लिया तो उसे जगत गुरू यीशु के मसीह होने के विषय में कुछ भी सन्देह न रहा. और जब उस ने दूसरी बार गुरू जी को अपने पास आते देखा तो उन की ओर फिर कर जो उस के पास खड़े थे बोल उठा· देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को उठा ले जाता है. यही ईश्वर का पुत्र है.

पाठक क्या तुम योहन के बचन को सत्य मानोगे. जगत गुरू यीशु मसीह जी का अद्भुत जीवन इस बात का साक्षी है.

उन के जीवन वृत्तान्त को पढ़ो और उन्हें अपना गुरू औ प्रभु जान कर सत्य के भागी हो जाओ.

२.

शिमोन और अन्द्रिय का जगत गुरू यीशु मसीह जी का शिष्य होना.

जिस समय योहन बपतिस्मा देनेहारे ने जगत गुरू यीशु मसीह जी के बिषय में साक्षी दी थी उस समय और लोगों को छोड़ उस के दो शिष्यों ने उस की बात पर बड़ा ध्यान दिया यह दो शिष्य योहन और अन्द्रिय थे. गुरू जी के चले जाने पर ये दोनों उन के पीछे पीछे चले और उस दिन गुरू जी के संग रह कर उन के विषय में बहुत कुछ सीखते रहे. गुरू जी के पास से चले जाने पर उन दोनों ने ठान लिया कि हम योहन बपतिस्मा देनेहारे को छोड़ यीशु मसीह जी के चेले बन जायेंगे.

अपने घर पहुंचने पर अन्द्रिय ने यह उचित जाना कि सब से पहिले अपने भाई शिमोन को गुरू जी के बिषय में कहे सो उस ने उस को पा कर कहा कि हम ने मसीह को पाया है. शिमोन पहले से चंचल स्वभाव का था ज्योंही उस ने मसीह के बिषय में सुना वह उन्हें देखने को चला. गुरू जी ने देखते ही कहा तू शिमोन है आगे को तू पितर अर्थात पत्थर कहावेगा. गुरू जी ने देख लिया कि यह मनुष्य कैसे स्वभाव का है इसीलिये उसे यह नया नाम



दिया. यदि कभी आप शिमोन पितर का जीवन वृत्तान्त पढ़ें तो आप जान जायेंगे कि क्योंकर गुरू जी के कथनानुसार वह पत्थर के समान दृढ़ स्वभाव का मनुष्य बना. शिमोन भी अपने भाई अन्द्रिय के समान अपने नये गुरू को पा कर बहुत खुश हुआ .

ऐसा जान पड़ता है कि यह दोनों भाई कुछ समय के लिये अपने घर को जो गालील देश में था चले गये और उस समय की बाट जोहने लगे कि कब उन्हें गुरू जी की सेवा में जाना पड़े. परन्तु वे न जानते थे कि कब और किस समय गुरू जी उन्हें बुलावेंगे. एक दिन जब गुरू जी ईश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हुये गालील के समुद्र के तीर पर फिर रहे थे तो उन्हों ने शिमोन को जिस का नाम अब पितर हो गया था और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे. गुरू जी ने उन्हें देखते ही कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा. वे दोनों नये गुरू जी को चाहते तो थे परन्तु उन्हों ने कब सोचा था कि उन की सेवा में सब कुछ छोड़ कर जाना होगा सो जब गुरू जी ने उन्हें पुकारा तो वे दोनों तुरन्त अपने जाल छोड़के उन के पीछे हो लिये.

होने को तो यह दोनों भाई मछुवे थे कोई बड़े पढ़े लिखे मनुष्य न थे परन्तु इन का इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह को अपना गुरू ग्रहण कर लेना और अपना सब कुछ छोड़ उन की सेवकाई करना बड़ी आश्चर्यमय बात है. कभी कभी लोग एक काम करते और पीछे उस के लिये पछताते हैं और फिर जाते हैं परन्तु इन दोनों भाइयों की कथा बड़ी अद्भुत है. जगत गुरू यीशु मसीह जी के शिष्य

होने के लिये उन्हें नाना प्रकार के दुःख सहने हुए परन्तु वे कभी न पछताये और अन्त में जब उन्हें गुरू जी के नाम के कारण मृत्यु सहनी हुई तो वे आनन्द से अपने प्राण चढ़ा सके.

गुरू जी का वचन है: जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है।

३.

जगत गुरू यीशु मसीह जी का किसी शोमिरोनी स्त्री से बातचीत करना.

योहन बपतिस्मा देनेहारे का बन्दीगृह में डाले जाने का समाचार पाके जगत गुरू यीशु मसीह जी यहूदिया को छोड़ गालील देश की ओर चल पड़े. गालील के दुष्ट राजा हेरोद ने योहन को बन्दीगृह में डाला था परन्तु प्रभु तनिक भी न घबराये इधर लोग भी कुछ और ख्याल के हो गये थे सो प्रभु ने यही उचित समझा कि गालील देश में जा कर उपदेश करें.

गुरू जी ने शोमिरोन देश से हो कर जाना उचित समझा. बहुधा यहूदी इस मार्ग से यात्रा नहीं करते थे क्योंकि वे अपने तः धर्मी और पवित्र समझते और शोमिरोनियों को तुच्छ और नीच और महा पापी जानते थे. पर गुरू जा तो ऐसे ही लोगों को खोजने और बचाने के लिये आये थे सो वे उन लोगों के पास भी गये कि वे मुक्ति का सन्देशा सुनें.

शोमिरोन देश के सुकार नाम गांव के निकट एक कुआ है.



Copyright R. T.S. | Printed for the C.

गुरू जी चलते चलते जब थक गये तो इसी कुए के पास बैठ गये. दो पहर के निकट होगा क्योंकि शिष्य निकट के गाँव में भोजन लेने चले गये थे. गुरू जी को उस कुए पर बैठे कुछ ही समय हुआ था कि नगर की एक स्त्री कुए पर जल भरने आई. गुरू जी आगे से थके हारे वहाँ बैठे थे वे भूखे प्यासे भी थे. भोजन लेने तो शिष्य गये थे परन्तु प्यास क्योंकर मिटायें क्योंकि कुआ गहिरा था और जल भरने को उन के पास कुछ न था. सो जब यह स्त्री वहाँ आई तो प्रभु ने शुभ समय जान कर उस स्त्री से पानी पिलाने को कहा.

ज्योंही उस स्त्री ने प्रभु जी की बिन्ती सुनी उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यहूदी तो शोमिरोनियों से बैर रखते हैं परन्तु ये क्योंकर मुझ से जल मांग रहे हैं. प्रभु ने जब उस स्त्री की बात सुनी तो बड़े प्रेम से बोले जो तू ईश्वर के दान को जानती और यह जानती कि जो तुझ से कहता है कि मुझे पीने को दे वह कौन है तो तू उस से मांगती और वह तुझे अमृत जल देता. स्त्री ने गुरू जी का बचन तो सुना परन्तु उस का आश्चर्य कम न हुआ क्योंकि कुआ गहरा था और वह सोच न सकी कि वे किस बस्तु से पानी खींच सकेंगे. फिर उस ने प्रभु की ओर देख कर सोचा कि क्या जाने ये कोई धर्मी पुरुष हों और आश्चर्यकर्म द्वारा जल प्राप्त करें इसी लिये उस ने पूछा कि क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं.

प्रभु तो जानते थे कि स्त्री अज्ञान है और केवल संसारिक बातों के बिषय में सोचती है सो उन्हों ने उस के बिचारों को आत्मिक बातों की ओर फेरा . और उसे ऐसे जीवते सोते का उप-

देश दिया जिस के पीनेहारे फिर कभी प्यासे नहीं होते परन्तु उन के भीतर ही यह अमृत जल उमंगनेहारे सोते के समान हो जाता है.

जब उस स्त्री ने अमृत जल का ज्ञान पाया तो उस ने जाना कि जो पुरुष मुझ से बातें कर रहा है वह कोई साधारण पुरुष नहीं है बल्कि कोई महात्मा है सो वह बड़ो नम्रता से बिन्ती कर कहने लगी कि वह जल मुझे भी दिया जाय कि मैं कभी प्यासी न होऊं. गुरू जी ने यह जान कर कि वह अमृत जल चाहती है तो पहिले मन की शुद्धता की आवश्यकता बताई और जब स्त्री ने भी मान लिया कि मैं इस अमृत जल को प्राप्त करने के योग्य नहीं हूं परन्तु उस ने अपना बिश्वास प्रगट कर यह बताया कि जब मसीह आवेगा तब हमारी मुक्ति होगी. वह ही हम को सिखायेगा कि हमें क्योंकर और कहां ईश्वर की भक्ति और आराधना करनी चाहिये. इस पर गुरू जी ने उचित जाना कि अब उसे मोक्ष प्रदान करें और कह दिया कि मैं ही मसीह हूं तब तो स्त्री आनन्द से भर गई और अपने घड़े को छोड़ नगर की ओर दौड़ी और वहां जा कर प्रचार करने लगी कि आओ और कुए पर बैठे हुए एक मनुष्य को देखो जिस ने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया है . क्या यह मसीह नहीं है ?

उस नगर के लोग उस स्त्री को भली भांति जानते थे सो जब उन्हों ने उस के मुंह से धर्म की चर्चा सुनी और उस के जीवन को बदला हुआ पाया तो उन के मन में भी इस भेद को जानने की इच्छा उपजी और वे नगर से निकल के गुरू जी के पास आये. और यह जान कर कि स्त्री जो कुछ कहती है सब सत्य है गुरू जी

पर विश्वास कर बोले कि अब हमने आप ही सुना है और जानते हैं कि ये सचमुच जगत के त्राणकर्त्ता मसीह हैं. उन्हों ने गुरू जी से बिन्ती की कि वे उन के नगर में चलें सो गुरू जी दो दिन वहां रहे.

धन्य गुरू जो किसी को तुच्छ नहीं जानते बल्कि नीच से नीच जाति को अपनाय के उन में धर्म फैलाते हैं. स्वामिन् हम भी मुक्ति के प्यासे हैं कृपा कर हमें भी अमृत जल प्रदान कीजिये. हमारे नगर तथा मन में प्रवेश कर हमें भी मोक्ष सन्देशा दीजिये. क्या जगत की नीच व अछूत जातियों को आप ही ने नहीं उठाया. हमें भी उठाइये. भारत की दीन दशा पर ध्यान दीजिये. यहाँ की मूर्ख स्त्रियों पर स्वतन्त्रता व ज्ञान का सूर्य प्रकाश कीजिये. हे प्रभु हम से भी कहिये "यदि कोई प्यासा हो वे मेरे पास आके पीवे. जो मुझ पर विश्वास कर जैसा धर्म पुस्तक में लिखा है तैसा उस के अन्तर से अमृत जल की नदियां बहेंगी ."

यीशु मसीह के जो प्रेम जल से, यह खेत मन का हरा हुआ
पवित्रात्मा के फल से तब यहां रहेगा कब न भरा हुआ ॥

यीशु मसीह से प्रेम जिसने किया
नाम इ मसीह का है नित्य लिया
तन मन ओ धन सब सेवा में दिया
वही है जानो तरा हुआ ॥

संसारी सुख सब जिस ने है त्यागा. मृत्यु और पाप के भय से जो भागा
अपनी दशा से जो है अब जागा. अपने लिये है मरा हुआ ॥
जीता मसीह में जो नित्य है रहता. प्रेम इ मसीह से सब कुछ है सहता
प्रेम से भरे हुए बचन है कहता. पायेगा मुकट धरा हुआ ॥

४.

फरीशी और कर उगाहनेहारे का दृष्टान्त.

जिस देश में जगत गुरू यीशु मसीह जी ने नर देह धारण कर मोक्ष का सन्देशा सुनाया कुछ ऐसे लोग रहते थे जो हमारे भारतवर्ष के ब्राह्मणों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं. यहूदियों में हमारे देश की तरह जात पात तो न थी परन्तु उन में जो लोग किसी एक बिचार के थे वे एक दल में और जो किसी दूसरे बिचार के हों वे किसी दूसरे दल में मिल जाते थे और कभी कभी इन दलों में बड़ी अनबन हो जाती और एक दूसरे के लहू के प्यासे हो जाते थे. सो जिस समय का हम बर्णन कर रहे हैं उस समय कुछ ऐसे लोग थे जो फरीशी नाम से प्रसिद्ध हो गये थे.

फरीशी उस दल के लोग थे जो अपने को बड़ा धर्मी जान औरों को बहुत ही तुच्छ जानते थे वे धर्म कर्म के पूरा करने में बड़े उत्साही तो थे परन्तु सब कुछ दिखावे के लिये करते थे ताकि लोग उन की बड़ाई करें और बड़ा धर्मी जान कर उन का आदर भी करें. यह लोग प्रभु यीशु मसीह जी से झगड़ते रहते थे क्योंकि गुरू जी उन से कहते रहते थे कि दिखावे के लिये कुछ मत करो. कि जब तुम दिखावे के लिये धर्म पालन करते हो तो ईश्वर से कुछ बदला न पाओगे.

फिर यहूदियों में कुछ ऐसे लोग भी थे जो दीन धर्म का बिचार कम करते थे बल्कि समयानुसार चल कर राज काज में हाथ लगाते, धन कमाते और हां कोई कोई बुरी चाल चल कर



घृणित कर्म्मों में मग्न भी रहते थे. फरीशी इस प्रकार के सब लोगों को बहुत ही तुच्छ और नीच जानते थे यहां लों कि न उन के संग उठते बैठते और न खाते पीते थे. यद्यपि यह लोग भी यहूदी थे तौभी फरीशी उन्हें मन्दिर के भीतर नहीं आने देते थे.

एक दिन गुरू जी ने उपदेश देते हुए किसी फरीशी और कर उगाहनेहारे का दृष्टान्त दे कर उन लोगों को जो अपने पर भरोसा रखते थे कि धर्मी हैं और औरों को तुच्छ जानते थे इस बात का ज्ञान दिया कि जो कोई अपने को परमेश्वर के आगे ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो कोई नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा. वह दृष्टान्त यह है :—

दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने को गये एक फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारा फरीशी ने मन्दिर के भीतर अलग खड़ा हो यह प्रार्थना की कि हे ईश्वर मैं आप का धन्य मानता हूं कि मैं और मनुष्यों के समान नहीं हूं जो उपद्रवी अन्यायी और व्यभिचारी हैं और न इस कर उगाहनेहारे के समान हू. मैं अठवारे में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश दान करता हूं. परन्तु कर उगाहनेहारे ने दूर खड़ा हो स्वर्ग की ओर आंखें उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीट के कहा हे ईश्वर मुझ पापी पर दया कीजिये.

यह दोनों मनुष्य मन्दिर में तो गये परन्तु गुरू जी के कथनानुसार वह फरीशी नहीं जो अपने को धर्मी समझता था परन्तु वह कर उगाहनेहारा जिस ने अपने को पापी समझा परमेश्वर से धर्मी ठहराया गया.

प्रिय पाठक तनिक बिचार करो क्या तुम अपने को उस फरीशी के समान धर्मी समझे बैठे हो ! क्या तुम अपने धर्म व नेक कामों पर तो भरोसा नहीं रक्खे हो ? क्या तुम समझते हो कि तुम्हें पाप से पश्चात्ताप करने की आवश्यकता नहीं है ? भूलना नहीं कि जब लों हम इस दीन हीन कर उगाहनेहारे के समान अपने को नीच न करें तब लों हम कभी भी ऊंचे न किये जायेंगे. जगत गुरू यीशु मसीह जी इसी लिये जगत में आये कि उन के लिये जो धर्म हीन अथवा नीच हैं स्वर्ग का द्वार खोलें.

५.

जगत गुरू यीशु मसीह जी का एक छोटे बालक के द्वारा स्वर्ग के राज्य का भेद खोलना.

जगत में हर कहीं बड़े छोटे का ख्याल तो पाया ही जाता है परन्तु कभी कभी प्रभु के भक्तों में भी यह बुरा रोग फैल जाता है और बड़ा दुःखदाई हो जाता है. गुरू जी के बारह चेले थे. यह सत्य है कि वे सब के सब एक ही स्वभाव व बिचार के न थे. उन में से हर एक में कोई बिशेष गुण तो अवश्य ही हुआ होगा इसी लिये गुरू जी ने उन्हें इस योग्य जाना कि वे सदा उन के संग रहें और उन के चले जाने के पीछे उस कार्य्य को पूरा करें जो वे आप करने आये थे. यह भी सत्य है कि इन चेलों में कोई तो गुरू जी से



अधिक प्रेम रखता था और कोई उस से कुछ कम. सम्भव है कि इसी कारण कभी कभी इन में आपस में अनबन हो जाती थी.

एक दिन न जाने कि किस तरह इन शिष्यों में यह तकरार छिड़ गई कि हम में से बड़ा कौन है. वे अपने आप इस प्रश्न का ऐसा उत्तर न दे सके जिस से सब सन्तुष्ट हो जायें सो वे गुरू जी के पास पहुंचे और बोले महाराज हम में इस प्रकार तकरार हो रही है कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है ? गुरू जी को इस बात से अवश्य ही शोक हुआ होगा कि शिष्यों में भी इस बात की चर्चा है और कि वे भी अब तक ईश्वर के राज्य के भेद को नहीं जानते सो उन्हों ने एक बालक को अपने पास बुलाके उन के बीच में खड़ा किया और कहा मैं तुम्हें सच कहता हूं जो तुम मन न फिराओ और बालकों के समान न हो जावो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करने पावोगे. और फिर उसी बालक को अपनी गोद में उठा कर बोले. जो कोई अपने को इस बालक के समान दीन करे सो ही स्वर्ग के राज्य में बड़ा है.

शिष्यों ने जब गुरू जी के उपदेश को सुना तो उन्हें बड़ा अचंभा हुआ होगा क्योंकि वे तो सोचते होंगे कि गुरू जी तुरन्त यह कहेंगे कि पितर व योहन व याकूब व कोई और सब से बड़ा है व दूसरा उस से छोटा परन्तु गुरू जी ने ऐसा उत्तर दिया जो प्रशंसा योग्य है. जब गुरू जी ने देखा कि वे इस उत्तर को सुन बड़े आश्चर्य से एक दूसरे का मुंह देखने लगे तो फिर बोले :—

जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर

बिश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता. ठोकरों के कारण हाय संसार. ठोकरें अवश्य लगेंगी परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा ठोकर लगती है. जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे. लंगड़ा अथवा टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाय. और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल के फेंक दे काना होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय.

फिर प्रभु ने यह भी कहा कि तुम इन छोटों में से एक को तुच्छ न जानो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गबासी पिता का मुंह नित्य देखते हैं.

गुरू जी के उपदेश से सब सुननेहारे बिस्मित हो गये और शिष्यों ने भी अपनी भूल मान ली और क्या जाने उन्हों ने प्रण किया हो कि आगे को फिर इस प्रकार तकरार न करेंगे.

—:-o-:—



६.

मर्था औ मरियम नामे दो धर्मी बहिनों की कथा.

जगत गुरू यीशु मसीह जी यरूशलीम नगर में स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार प्रचार करने के पीछे रात को बैथनिया नाम गांव में जा टिकते थे क्योंकि यहां उन के मित्र रहते थे. यह छोटा गांव यरूशलीम नगर से कोई दो मील दूर जैतून पर्बत की उतार में बसा हुआ था. इस के आस पास अनार, जैतून, बादाम आदि के पेड़ पाये जाते थे. सो गुरू जी यरूशलीम के फरीशियों व अध्यापकों के झगड़े के पीछे इस सुन्दर स्थान में हर प्रकार का बिश्राम पाते थे. क्योंकि यहां पर मर्था और मरियम और इलिजायर उन की बाट जोहते रहते थे.

जब कभी गुरू जी अपने चेलों सहित इस गांव में आते थे तब गुरू जी के मित्र उन की पहुनाई करते थे जिस से उन का प्रेम और सेवा का परिचय मिलता है. सो एक दिन फिर जब गुरू जी वहां आये तो मर्था उन के लिये भोजन तैयार करने में लग गई. जब उस ने देखा कि उस की बहिन उस की सहायता नहीं कर रही है सो वह उसे ढूंढने लगी और क्या देखती है कि वह गुरू जी के चरणों के पास बैठी बचन सुन रही है. इसलिये कि मर्था सेवकाई में बझी हुई थी उसे मरियम का इस प्रकार बैठना पसन्द न आया और कुछ गुरू जी से भी नाराज हो गई कि वे भी मरियम को नहीं भेज रहे हैं सो उन्हीं से कहने लगी हे प्रभु क्या आप को सोच नहीं है कि मेरी बहिन ने मुझे अकेली सेवा करने को

छोड़ दिया है. इसलिये उस को आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे.

गुरू जी बड़े दयालु और नम्र और प्रेमी थे वे जानते थे कि मर्था को सहायता की आवश्यकता है परन्तु वे यह चाहते थे कि वह उन के लिये भोजनादि तैयार करने में अपना उत्तम समय न खो दे सो उन्हों ने बड़े प्रेम से कहा "मर्था, मर्था तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है परन्तु एक बात आवश्यक है और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उस से लिया न जायगा." मर्था जानती थी कि गुरू जी उसे भला मानते हैं सो उस ने उन के बचन का मूल समझ लिया क्योंकि गुरू जी कभी भी ऐसी पहुनाई से प्रसन्न न होते जिस के लिये दूसरों को दुःख होवे संसारिक भोजन की इतनी चिन्ता नहीं करते जितना आत्मिक भोजन की फिर वे अपने लिये ऐसे चिन्तायमान नहीं होते जितना दूसरे के लिये उन्हों ने एक बेर अपने शिष्यों को खाने के प्रश्न पर यह उत्तर दिया था कि " मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारे की इच्छा पर चलूं और उस का काम पूरा करूं " इसी लिए उन्हों ने मरियम की प्रशंसा की क्योंकि वह अपना बहुमूल्य समय ईश्वर के बचन सुनने पर लगा रही थी.

प्रिय पाठक क्या इस कथा में हम समय को उचित रीति से काम में लाने के बिषय में शिक्षा नहीं पाते हम कहां तक अपना समय अपने सुख भोग में व्यय करते हैं और हमारा कितना समय ईश्वर की इच्छा जानने और उस के अनुसार चलने में बीतता है.



ight R.I.S. Printed [illegible]

परमेश्वर करे कि हम सब के सब मर्था के समान तन मन से गुरू जी की सेवा करनेहारे और मरियम के समान अपना समय गुरू जी के बचन सुनने में बिताने वाले हो जायें.

—:o:—

७.

जगत गुरू यीशु मसीह जी का अपने मित्र इलियाजर को जिलाना.

पिछली कथा में हम अपने पाठकों को बैथनिया गांव का परिचय करा चुके हैं और बता आये हैं कि उस गांव में क्योंकर गुरू जी के मित्रों का घर था जहां वे बहुधा विश्राम करने जाया करते थे. हम यह भी बता चुके हैं कि वहां इन मित्रों में दो बहिनों का घर प्रसिद्ध था उन का एक भाई था जिस का नाम इलियाजर था. गुरू जी के चले जाने के पीछे वह रोगी हुआ और मरने को था कि इन बहिनों ने उचित समझा कि गुरू जी को समाचार पहुंचाना चाहिये. सो उन्हों ने केवल इतना सन्देशा भेजा कि "हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं सो रोगी है." यद्यपि इस सन्देश-पत्र में अधिक लिखा न था तथापि यह बस था कि गुरू जी उन की सहायता को आवें. वे बहिनें जानती थीं कि गुरू जी उन के परिवार से कितना प्रेम करते हैं और कि यदि रोगी को अधिक दुःख न होता तो उन्हें सन्देशा भी न भेजा जाता.

सो जब गुरू जी को यह समाचार पहुंचा तो वे जान गये कि इस बीच रोगी मर गया है सो उन्हों ने कहा कि यह रोग मृत्यु के लिये नहीं परन्तु ईश्वर की महिमा के लिये है कि ईश्वर के पुत्र की महिमा उस के द्वारा प्रगट को जाय.

इस के पीछे गुरू जी अपने काम में लग गये और दो दिन उसी स्थान में रहे. तब उन्हों ने अपने चेलों से कहा कि हमारा मित्र इलियाजर सो गया है परन्तु वे न समझे तब उन्हों ने साफ साफ कह दिया. कि वह मर गया.

जब गुरू जी बैथनिया पहुंचे तब इलियाजर को मरे हुए चार दिन हो गये थे और उस घर में बहुत लोग इकट्ठा थे कि इन बहिनों को शान्ति देवें. इतने में वहां खबर पहुंची कि गुरू जी आ गये हैं और मर्था सुनते ही उन से भेंट करने चली परन्तु मरियम घर ही में रही. मर्था ने समझा कि गुरू जी को अब तक मालूम नहीं है कि इलियाजर मर गया है सो उन्हें देखते ही दण्डवत कर बोली हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता. परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो आप ईश्वर से मांगें ईश्वर आप को देंगे. मर्था का मतलब शायद यह होगा कि ईश्वर आप को उस सा कोई मित्र दे देगा. परन्तु गुरू जी ने कहा तेरा भाई जी उठेगा.

यहूदी लोग यह मानते थे कि जगत के अन्त में पुनरुत्थान होगा जब सब मृतक जिलाये जायेंगे इसलिये मर्था ने भी उत्तर दिया कि हां पिछले दिन पुनरुत्थान में वह जी उठेगा.

वह न जानती थी कि मृत्यु की कुञ्जी गुरू जी के हाथ में ही है. सो गुरू जी को कहना पड़ा कि **"मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूं. जो मुझ पर विश्वास करे सो यदि मर जाये तौ भी जीयेगा."** मर्था तो गुरू जी के सामर्थ्य पर विश्वास रखती थी सो इस समय उस के भाई की मृत्यु उस के विश्वास को कम न कर सकी सो उस ने उत्तर दिया हे प्रभु मैं ने विश्वास किया है ईश्वर के पुत्र ख्रीष्ट जो जगत में आनेवाले थे आप ही हैं.

इतने में गुरू जी घर के कुछ निकट आ गये और मर्था अपने घर जा अपनी बहिन को बुला लाई. मरियम रोती हुई गुरू जी के पास आई. जब गुरू जी ने उस के दुःख को देखा तब उन का मन भर आया और आंखों से जल बहने लगा. और लोग भी देख के कहने लगे कि देखो वह उसे कैसा प्यार करता था. सो प्रभु ने पूछा कि तुम ने उसे कहां रक्खा है वे बोले आ कर देख लीजिये. सो वे सब कबर पर आये वह एक गुफा थी और उस के द्वार पर एक पत्थर धरा था.

गुरू जी ने लोगों से कहा कि पत्थर सरकाओ यह सुन कर मर्था हाथ जोड़ कर बोली हे प्रभु जाने दीजिये उस में से तो बास आती होगी क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गये हैं. मर्था न जानती थी कि प्रभु जी क्या करने को हैं सो उन्हें फिर कहना पड़ा मर्था जो तू विश्वास करे तो ईश्वर की महिमा को देखेगी जो लोग साम्हने खड़े थे उन्हों ने तुरन्त कबर के द्वार पर से पत्थर सरका दिया और

प्रभु ने प्रार्थना कर बड़े शब्द से पुकार कर कहा हे इलियाजर बाहर आ. शब्द का निकलना था कि इलियाजर जिसे मरे हुए चार दिन हो गये थे चद्दर से हाथ पांव बांधे हुए बाहर आया और उस का मुंह अंगोछे में लपेटा हुआ था. गुरू जी ने लोगों से कहा उसे खोलो और जाने दो.

प्रभु योशु मसीह जी का यह सब से बड़ा आश्चर्य कर्म था जिसे देख कर बहुत लोग बिश्वासी हो गये और उचित था कि बड़े बड़े फरीशी और अध्यापक भी बिश्वासी हो जाते परन्तु उन्हों ने जब इलियाजर के जी उठने की कथा सुनी और समझे कि अब तो हमारी कुछ न चलेगी सब लोग गुरू जी के चेले हो जायेंगे सो उन्हों ने एकमत हो गुरू जी को मार डालने की ठानी वे भूल गये कि यदि हम उन्हें मार भी डालें तो क्या गुरू जी तो आप ही पुनरुत्थान और जीवन हैं.

—:o:—

८.

जगत गुरू यीशु मसीह जी के दो चेलों अर्थात पितर और योहन की कथा.

जगत गुरू यीशु मसीह जी के बारह चेलों में पितर और योहन का नाम सब से बढ़ा चढ़ा है. वे गुरू जी के खास चेले थे जिन्हें प्रभु जी सदा अपने निकट रखते और ऐसी गुप्त बातें बताते थे जो औरों को बताना उचित न थीं. सो जब गुरू जी इस



Painted for the C.L.S.

जगत को छोड़ स्वर्ग को चले गये तब पितर और योहन ने अपने साथी चेलों को इकट्ठा कर उन को उस समय लों अपने संग रखा जब लों वे भी उन्हीं के समान पवित्रात्मा से भर कर इस योग्य हो गये कि अपने गुरू के लिये दु:ख व अनादर सहें और जगह जगह जा कर उन के गुणों का बखान करें.

हम इस पुस्तक माला के पहिले भाग में बता चुके हैं कि पितर व योहन जो पहिले मछुवे थे क्योंकर जगत गुरू यीशु मसीह जी के चेले हो गये थे. वे यहूदियों में से थे सो एक दिन का वर्णन है कि वे तीसरे पहर प्रार्थना के समय यरूशलीम के प्रसिद्ध मन्दिर में प्रार्थना करने गये. उस मन्दिर में प्रवेश करने के कई द्वार हैं उन में से एक को सुन्दर द्वार कहते हैं अधिकतर लोग इसी द्वार से मन्दिर में जाते थे. इस द्वार पर लोग किसी मनुष्य को जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था रख आते थे कि वह मन्दिर में जानेहारों से भीख मांगे.

सो जब पितर और योहन इसी सुन्दर द्वार से मन्दिर में जा रहे थे तो इस लंगड़े मनुष्य ने उन से भीख मांगी. उन्हों ने उस लंगड़े की ओर देख कर अपने मन में सोचा होगा कि हमारे गुरू जी ऐसी दीन दु:खी मनुष्यों पर दया कर उन्हें चंगा कर देते थे फिर यह बिश्वास कर कि वह अब भी अपने भक्तों के द्वारा इसे चंगा कर सकते हैं उस लंगड़े मनुष्य से बोले हमें देख—हम निर्धन मनुष्य हैं परन्तु हम यीशु मसीह जी के चेले हैं. सो उस मनुष्य ने उन की ओर देखा कि कुछ मिले. पितर ने कहा चांदी और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु जो मेरे पास है तुझे देता हूं यीशु

मसीह नासरी जी के नाम से उठ और चल. तब उस का दहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया और तुरन्त उस के पावों और घुटनों में बल आ गया और वह उछल के खड़ा हुआ और फिरने लगा और फिरता और कूदताऔर ईश्वर की स्तुति करता हुआ उन के संग मन्दिर में गया.

सब लोगों ने उसे फिरते और ईश्वर की स्तुति करते हुए देखा और उसे पहिचाना कि वही है जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर भीख के लिये बैठा रहता था. फिर पितर और योहन की ओर देख कर अचंभित और बिस्मित हुए. तब यह देख कर पितर ने लोगों से कहा तुम इस मनुष्य से क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हम ने अपनी ही शक्ति अथवा भक्ति से इस को चलने का सामर्थ्य दिया है. हम ने यह सब कुछ जगत गुरू यीशु मसीह नासरी के नाम से किया है जिन को तुम ने घात किया परन्तु ईश्वर ने मृतकों में से उठाया और इस बात के हम साक्षी हैं सो उन के नाम के बिश्वास से हां उन के नाम ही ने इस मनुष्य को जिसे तुम देखते और जानते हो सामर्थ्य दिया है. जो बिश्वास उन के द्वारा से है उसी से यह मनुय तुम सभों के साम्हने आरोग्य हुआ है.

क्या तुम ने गुरू जी के नाम की महिमा देखी. आज भी उन के नाम से सहस्रों मनुष्य जो पाप के द्वारा लंगड़े हो गये हैं चंगे किये जाते हैं. क्या तुम भी चंगा होना चाहते हो ?